P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-3* June- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य और अनुवाद

अनिल कुमार
पुस्तकालयाध्यक्ष,
पुस्तकालय विभाग,
भगत फुल सिहं महिला
विश्वविद्यालय,
खानपुर कलां, सोनीपत,
हरियाणा

सारांश

आधुनिक युग में हिन्दी कविता का अपना महत्व है। हिन्दी कविता के बढते ज्ञान के कारण से आधुनिक काल में देश से प्रत्येक हिस्से में कोई ना कोई कवि मिल ही जायेगा। इनमें आधुनिक समय में हिन्दी कविता के लिये माननीय कुँवर नारायण का नाम लिया जाना बहुत उपयुक्त होगा। उनके द्वारा अपनी कविताओं में संवेदना और शिल्प को बहुत ही मार्मिक तरिके से दर्शाया गया है। इन्होने हिन्दी में अनेक कविता लिखी और हिन्दी कविता को नई उचाईयों पर ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। मन में होने वाली अनुभूति और सहानूभूति प्रकट करने की किया। जो कि संवेदना और शिल्प पर अपने अपने तर्क–वितर्क अलग अलग से रख रहे है।

मुख्य शब्द : एकता, नारी दुर्दशा, अग्रेजी भाषा, जीवयष्टि, भरमार, द्योतक, मतों, सहानुभुति, निरूपण, सौन्दर्य, शौर्य, अनुभव, आध्यात्मिक, गतिशीलता, अनुभूत, इन्द्रियों, भिन्नता, वास्तविक, अवास्तविक, राष्ट्रचेतना नयी अनुभुति, मार्मिक प्रकृति आदि।

प्रस्तावना

संवेदना शब्द के लिये अग्रेजी भाषा में सन्शेसन का प्रयोग किया गया हैं। संवेदना और शिल्प को हिन्दी कविता में कवियों के द्वारा अलग–अलग से बताया गया है। ये एक महान कर्मठ व्यक्ति थे उनके द्वारा लिखी गई प्रमुख कविताओं में से 'इन दिनों, वाजश्रवा के बहाने, हाशियें का गवाह, कोई दूसरा नहीं, चक्रव्युह, परिवेश : हम तुम, तीसरा सप्तक और आमने सामने आदि इनकी कविताओं में सरस, मार्मिक प्रकृति का वर्णन किया गया है। इन्होंने अपनी शिक्षा फैजाबाद में पूर्ण की थी। इसके बाद ये दिल्ली में आ गये और हिन्दी के कार्य में अपना योगदान देने लगे। मन में होने वाला अनुभव। किसी भी व्यक्ति को कष्ट में देखकर होने वाला दुख। लेकिन हिन्दी में यह सहानुभुति के पर्याय के रूप में ही प्रचलित हैं। हिन्दी कविता में नई जान फुकने के लिये इन्होनें बहुत मेहतन की है।

हिन्दी कविता में संवेदना पर सभी कवियों ने अपने अलग–अलग मत दिये है। इनके अनुसार संवेदना किसी व्यक्ति के प्रति आदर और उसका सम्मान करना है। हिन्दी कविता को गति देने के लिये लेखकों का योगदान हमेशा याद किया जायेगा।

साहित्यावलोकन

हिन्दी के भक्तमाल, कविमाला, कालिदास हजारा और दौ सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, ग्रंथों मे देखने को मिलती है। आदिकाल से ही साहित्य और अनुवाद साथ–साथ चले आ रहे है। हजारी प्रसाद द्विवेदी और मिश्र बंधुओं के अनुसारः हिन्दी साहित्य की भूमिका, उद्‌भव और विकास तथा हिन्दी साहित्य का इतिहास (पहला प्रकाशन 1913 में)।

साहित्य का विकास तभी सम्भव है, जब उसका अनुवाद पूर्ण रूप से किया जा सकें। पहले केवल साहित्य की रचना की जाती थी। लेकिन आज के युग में उस रचना का अनुवाद भी किया जाने लगा वो भी कई भाषाओं में जिससे अन्य भाषी लोगों को आसानी से समझ मे आ सकें (शुक्ल ने 1929 में)।

आधुनिक युग में साहित्य और अनुवाद होने के हिन्दी के विकास को गति देने में सहायक सिद्ध हो रहे है। जिससे अनुवाद के साथ में उसकी आलोचना भी होने लगी है जिससे साहित्य को सुधारने के सुअवसर मिलने लगे है (यशपाल, रामवृक्ष बेनीपुरी आधुनिक युग के लेखक 2010 में)।

इसके बाद में द्विवेदी जी का नाम आता है। जिन्होने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था। आधुनिक युग को आगे ले जाने के लिये हमेशा इनका योगदान गिना जायेगा। (हिन्दी साहित्य का इतिहस एवं www.google.com 2016)।

संवेदना व शिल्प दोनों का नयी कविताओं में प्रमुख योगदान होता है, व्यक्ति समस्त संवेग, रूचि भाषा का विकास समाज के लिये करता है, जो कि नयी कविताओं की उत्पति का आधार है। कविताओं में संवेदना और शिल्प समग्र व्यक्तित्व, काल परिवेश की स्थितियों का अनुमान लगाकर पूर्ण किया जाता है। भाषा को आर्कषक करने के लिये प्रतीकों, बिम्बों का सहारा लिया गया है। कविताओं में संशय, अनास्था, स्वार्थ लक्षणा और सामाजिक ताने–बाने का चित्रण विद्यमान है।

अध्ययन का उददेश्य

कविताओं में इसका प्रयोग स्नायुविक संवेदना और शिल्प की अपेक्षा मनोगत संवेदनाओं के लिये अधिक होता है। इसके संदर्भ में संवेदनशीलता मन की प्रतिक्रिया की शक्ति ही है, जिसके द्वारा संवेदनशील व्यक्ति दुसरे के सुख–दुख को समझ उससे अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इसी दृष्टि से अनुभूति एवं भाव–प्रवण व्यक्ति की संवेदनाएं अधिक जागृत होती है।

संवेदना और शिल्प के रूप

पहले हिन्दी कविता में प्रेम, दया, करूणा, सौन्दर्य, शौर्य आदि को संवेदनशील करने वाले तत्वों का निरूपण होता था। विंसगति कविता साहित्य में नयी अनुभुतियों का द्योतक माना गया है। हिन्दी कविता की गतिशीलता परिस्थितियों में परिवर्तन से सम्भव है। ये सब संधर्ष से ही हो सकता है। व्यक्ति व समाज का दृष्टिकोण वैज्ञानिक होता जा रहा है ना कि मध्य काल की आध्यात्मिक। समाज में व्यक्ति नये अनुभव प्राप्त कर रहा है और उसकी संवेदनाओं में भी नयापन देखने को मिलता हैं।

1. प्रेमविषयक संवेदना।
2. सौन्दर्यविषयक संवेदना।
3. समाज और व्यक्ति सम्बन्धित संवेदना।
4. राजनीतिविषयक संवेदना।

'शिल्प' शब्द का अथ अग्रेंजी के 'टेकनीक' शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ है कि तरीका, रचना शिल्प कला कौशल आदि। शिल्प एक ऐसा माध्यम है जिसके सहारे कवि आत्माभिव्यक्ति करता है। वह दूसरी और रूप देता है।

कुछ में अन्तर बचाओं
कुसेडस और किडें युद्ध
कुछ लोग जीतने के नियमों में
आत्मसम्मान के अर्थ को संशाधित करें।

कवि को अपनी कृति सफल बनााने के लिये शिल्प का विकास करना अनिवार्य होता हैं। कला की रचान में जिस प्रकार से रीतियों व विधियों का उपयोग किया जाता है, उसे ही कविता में शिल्प के नाम से जाना जाता है।

शिल्प की परिभाषा

शिल्प हाथ से कोई वस्तु बनाकर करने की कला, दस्तकारी और कारीगरी को शिलप कहते हैं। इससे भाव हाथ से कोई चीज बना कर तैयार करने का काम कला संबधी व्यवसाय से होता है। कुवंर नारायाण की कविता में इसे दिखाया गया है।

परिवर्तन बदलने का मतलब है, ऐ मेरे दोस्त
न केवल स्थानांतरित किया गया, मैं खुश हूँ।
कि अब के पारगमन में आपको,
स्थानांतरित कर दिया गया है
एक बहुत बडा अधिकारी
अन्य सभी जो होना चाहिए था।
पुराने दस्तावेजों के लिए बदल दिया, वही वही है।
क्या आप वहां मौजूद हैं।

हिन्दी कविता में शिल्प को अधिक सुन्दर बनाने के लिये निम्न करना होता है। जिससे उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते है।

1. अलंकार
2. छंद
3. भाषा
4. मिथक
5. मुहावरे और
6. लोकोक्ति
7. व्यग्ंयात्मकता
8. प्रतीक
9. नाटकीयता
10. बिम्ब आदि।

इस प्रकार आधुनिक कविता में संवेदना व शिल्प एक दुसरे के समान चलकर कविता में निखार पैदा करती है। इससे हिन्दी कविता में रोचकता आती है। उसकी लिखने में कला के माध्यम से मदद मिलती हैं। इन्होनें हिन्दी कविता में निखार ला दिया। संवेदना व शिल्प दोनों को अपनी जगह पर अलग अलग से अपने रोल को दर्शाया गया है।

निष्कर्ष

हिन्दी कविता में संवेदना एवं शिल्प दोनों का होना जरूरी है। जन सामान्य में हिन्दी कविता का आधुनिक युग में अपना ही महत्व है। संवेदना किसी के प्रति सहानुभुति को दिखाती है और शिल्प आर्ट के साथ में कला, तरीका को प्रकट करती है। हिन्दी की आधुनिक कविताएं संवेदना और शिल्प से जूडी होकर अधिक अच्छी प्रतीत होती जा रहीं है। इसको रोचक बनाने के लिये तद्भव, तत्सम, देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कविताओं में अंलकारों, प्रतीकों और मुहावरों की शब्द शक्तियों के साथ में छंद, मिथक को शिल्प के तत्व उपदान माना गया है। संवेदना एवं शिल्प दोनों से कविताओं की भाषा में रस, सरलता, महत्वता पैदा करती है, जिससे उसकी गुणवता और बढ जाती है और वह अधिक रोचक लगने लगती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कविता में संवेदना और शिल्प।*
2. *हिन्दी कविता एक सामाजिक अध्ययन से।*
3. *कुँवर नारायाण की कविता संवदेना और शिल्प में।*
4. *www.google.com*
5. *www.wikipedia.com*

Please update References in MLA Pattern.